You never know how strong your are until being strong is the only choice you have

EXPERIENCES OF **CANCER** PATIENT AND SURVIVORS

शरीरमाद्यं खलु धर्मसाधनम्

Department of Pediatrics,
Oncology Division
AIIMS, New Delhi

Don't lose hope.
When the sun goes down, the stars come out

मैं नीरज A.M.L. की सरवाइवर हूं। और मैं अब ठीक हो चुकी हूं। मैं सरस्वती विद्या मंदिर स्कूल में पढ़ने जाती हूं। मेरा इलाज दिसम्बर २००६ से हो रहा है, जुलाई २०१० तक मेरी कीमोथेरैपी हुई, इस दौरान मुझे बहुत सी परेशानियां हुई थी जैसे – पैचिस, खाना न लगना, बुखार आना, उल्टी और यहां तक की हार्ट का दौरा भी पड़ता था और बहुत सी परेशानियां आयी। लेकिन मेरे दादा ने मेरी हिम्मत बढ़ाई, और अब मैं बिल्कुल स्वस्थ हूं और मैं अच्छा फील करती हूं। और मैं आगे एम्स की नर्स बनना चाहती हूं।

मेरा नाम यशवी है। मुझे बहुत बुरा लगा जब मुझे मेरी बिमारी के बारे में पता चला पर फिर मैंने सोंचा की जब इतने सारे बच्चे यहां से ठीक होकर गए हैं तो मैं भी जाउंगी और फिर मुझे मेरे भगवान पर पूरा भरोसा है। मेरा भाई जो कि वो भी मुझसे दूर हो गया मुझे उसकी बहुत याद आती है और मेरे दोस्त बहुत अच्छे थे उनकी भी मुझे बहुत याद आती है। मेरा स्कूल जाना बंद हो गया। मुझे बहुत बुरा लगता है। मुझे इंजेक्शन लगवाने में बहुत दर्द होता है। मेरी नसें नहीं मिलती है लेकिन यहां डॉक्टर मुझे बहुत प्यार करते हैं और अच्छे से ट्रीट करते हैं।

Ritu Bhalla

- 21 year old SURVIVOR of
Acute Lymphoblastic Leukemia (ALL) cancer, 2004.
Graduate B.Com, Delhi University.
- Also, the leading KidsCan Konnect(KCK),
- a Cancer Survivor Youth group.

In her own words...

Psychologists say that the fear of cancer kills the patient more then the disease itself. It takes guts to emerge as a winner!!

I was sick of being injected with the drugs, countless times, sick of asking God, "Why Me?" But "I had lots of things to do, so I couldn't die..." With this thinking I stood up and faced the disease!!

I had some knots near my left ear, which swelled and started paining. Doctors at nearby hospital couldn't understand my problem and referred my case to All India Institute OfMedical Sciences(AIIMS). Here after a long series of medical tests and checkups my parents were informed that I had cancer. My mom and dad didn't have courage to tell me that I had cancer. But the doctors asked my parents to inform me about my disease.

At first, I couldn't believe that I had cancer but decided to fight with it! I underwent chemotherapies for two years in various cycles of medication, due to which I lost my long hair... I cried for them as I love my hair a lot.

It was difficult to continue my studies during treatment. My school Principal wasn't allowing me to continue out of the "fear of infection to other students" (Cancer is non-contagious!!) and also because of my health concerns. But I told her that given a chance I will work hard and will perform well. While I was unable to attend my school regularly due to medication, my teachers' supported me and I cleared my final examinations with good marks despite the pain and weakness.

I had to take 12 injections in back and hands every Monday. Mostly the Doctors were not able to find the correct vein and they would pierce me with sharp syringes. "This was painful but God gave me courage to tolerate it". The disease made me a strong person but took away all my friends from me. My classmates neglected and avoided me. They denied sharing the desk and food with me.

"I was hurt but my parents stood by me..." I have fought with the Cancer Disease and today I am a successful person. My only message to the world is that:

"Don't be afraid of Cancer, if it happens then fight with it because childhood cancer is curable!!!

'When you come to the come end of your rope, tie a knot and hang on'

My name is Nidhin John, my treatment started in 2002 and it continued till 2005. When my treatment started I was 6 and a half years old.Now I'm 17th yearsold. During my 2nd Chemotherapy I got infection in my gums and was admitted for 2 months in AIIMS. We should be very careful while treatment is going on. According to me the patient should keep themselves well informed about the course to prevent any kind of infections or side-effects.

After the treatment I was diagnosed with HBS +ve , this was a sad situation, but if I could come up from this storm, I believe I will definitively defeat HBS +ve as well !. It is all about how much confident you are in yourself . I'm confident about myself and now it's time for you people.

मैं मारिया अश्द अपने बिमारी के बारे में लिख रही हूं। मैं बिहार की रहने वाली हूं। जून २०१० को मैं यहां ईलाज के लिए आई थी। मुझे AML कैंसर की बिमारी थी। मेरा १८ महीने का course था। मेरा इलाज हो और मैं पहले से बहुत अच्छी हूं। ईलाज के दौरान मुझे बहुत समस्या हुई। हाथ का सपदम बहुत जल्दी खराब हो जाते थे। मेरे भलों में ३ बार line लगा। मुझे ब्लड की भी बहुत जरूरत पड़ी। बहुत मुसीबत उठानी पड़ी। जौं मेरे रिश्तेदार और दोस्तों ने मुझे ब्लड दिये। मैं खुशनसीब हूं। जो इस बिमारी से मैं बच गई। हर कोई मुझे यही कहता मैं बचने वाली में से नहीं हूं। सब मुझे इस तरह देखते ऐसे बात करते जैसे मेरी जिन्दगी कुछ पल के लिए हो और मेरे सर की बाल भी उड़ गई पर अब पहले जैसे हूं। मुझे गर्व है कि मेरी इलाज एम्स में हुआ और वहां के सारे स्टाफ ने बहुत ध्यान दिये और मेरे इलाज करने वाली डॉक्टर रचना सेठ जी ने बहुत अच्छे तरीके से मेरा इलाज की और वे मुझ पर बहुत ज्यादा ध्यान दी। आज मैं उन्हीं के बदौलत जिन्दा हूं और अपनी जिन्दगी जी रही हूं।

Courage : 'Courage is not the absence of fear, but rather the judgment that something else is more important than fear'

Be positive... "I know it's impossible to remain positive throughout your cancer battle. During those tough times, allow yourself to vent to let negative energy out so that you regain your strength again. Never give up because hope is absolutely everything. Positive thoughts and prayers to all of you

मैं मो. अलतमस का पिता हूं। मैं मो. अलतमस को नई दिल्ली एम्स अस्पताल में पहली बार ०६ अगस्त २०१२ को पहुंच कर कमरा नम्बर ३ (तीन) में जब डॉक्टर के पास पहुंचा तो मुझे ऐसा लगा जैसे यहां ईलाज कराना असंभव है। हम अपने बच्चे को यहां पर ईलाज नहीं करा पाएंगे लेकिन जैसे जैसे इसी बिमारी से ग्रस्त माता पिता से मिलाए जानकारियां प्राप्त होते और हौसला बुलन्द होते गया। कमरा नम्बर तीन में जो डॉक्टर बैठे थे उन्होंने मुझे बताया कि बुधवार को कमरा नम्बर सात में श्रीमती डॉक्टर रचना सेठ मैडम देखती है वहां जाकर दिखाएं ०६ अगस्त २०१२ से २२ अगस्त २०१२ के बीच जो भी जांच होनी थी हुई। २२ अगस्त को अलतमस को ऐडमिट किया गया लेकिन खांसी के कारण डिसचार्ज कर दिया गया। फिर दुबारा से २६ अगस्त २०१२ को ऐडमिट कर लिया गया। ३१ अगस्त को अलतमस के बोन मैरो जांच हुई तो उस रिपोर्ट में ६०% बलास्ट नौरमल लिखा आने के बाद मैं असमंजस में रहता हूं कि आखिर अंग्रेजी में BLAST का मतलब तो तोड़ फोड़ होता है डाक्टर के अनुसार ब्लास्ट का क्या मतलब होता है।

प्रोटोकॉल के माध्यम से अलतमस का पहला साइकिल खत्म होने के बाद २८ सितम्बर २०१२ को बोन मैरो जांच हुई तो उस रिपोर्ट में ४% ब्लास्ट लिखा आने के बाद मैं ये समझता हूं कि अलतमस को बिमारी अब ५६% दूर हो गया। अब मैं ये जानना चाहता हूं कि आखिर सच क्या है। जितना बच्चे को इलाज कराने में परेशानी है उससे ज्यादा दिल्ली में रूकने या रहने में परेशानी है। आप सभी से निवेदन है कि ज्यादा से ज्यादा सदन में रहने का सहयोग करें।

मेरा नाम रिंकी सिंह है और मरीज का नाम संकेत है। और मैं उसकी मां हूं। मैं बिहार से आई हूं पहले मेरे बेटे को बुखार आया था। तो डॉक्टर से दिखाई तो डॉक्टर ने ब्लड कैंसर बताया और कहा कि एम्स ले जाओ तो हम और संकेत के बड़े पापा एम्स लेकर आए तो एम्स में फिर से सारी जांच हुआ। और इलाज शुरू हुआ। डॉ. रचना सेठ ने इलाज किया तो संकेत की बिमारी सही हो गया। अब संकेत ठीक है। बिमारी ठीक हुए दो साल हो गया अब संकेत ठीक है। अब परेशानी नहीं आती है। अब नोरमल बच्चे के तरह जीता है। मेरा बच्चे को डॉ रचना मैडम ने बहुत अच्छा केअर किया है।

यह जानकर कि मेरे लड़के शेखर को ब्लड कैंसर है। पहले मुझे यकिन ही नहीं हुआ कि यह क्या हो गया। मैं अकेले में बैठकर सोचना रहता और रोते रहता कि भगवान मैंने कौन सी गलती कर दी जो मेरे बच्चे को यह बिमारी दे दी। इससे अच्छा उसे मौत ही दे देते। रोज–रोज मरने से अच्छा रहता! भगवान को भला बुरा कहता रहता था। इस बिमारी ने तो मेरी जिन्दगी में भूचाल ही ला दिया। कुछ समझ में नहीं आ रहा था कि मैं क्या करूं। फिर डॉक्टरों ने समझाया कि इसका ईलाज है। १० बच्चों में से ४ बच्चे ठीक हो जाते हैं। घर बैठाने से तो ठीक होगा नहीं। इस बिमारी के चलते मुझे शारीरिक, मानसिक, और आर्थिक कष्ट सहने पड़े। बच्चे को जब वोनेमेरो, आईटीएम बगैरह जब होते उसके कष्ट को देखकर आत्मा रो देता था। पर धीरे–धीरे डॉक्टरों द्वारा बताए गये दिशा–निर्देशों के अनुसार मैं अपने बेटे का ईलाज करवाता रहा और उसके साफ सफाई का ध्यान रखता रहा। जिस करण आज मेरा बच्चा ठीक है। स्कूल भी जा रहा है। पढ़ने में भी ठीक है। अच्छा से खेलता, खाना–पीना सब ठीक है।

मेरा नाम कृष्णा दास है। मैं एलल कैंसर सरवाइवर हूं। मुझे १९९७ में कैंसर हुआ था। मुझे एम्स में डॉक्टर बहुत प्यार करते थे। १९९७ में जब मेरा कैंसर का इलाज शुरू हुआ। तब मैं तीन साल का था। मेरा इलाज सन् २००० में खत्म हुआ था। फिर मैं सन् २००४ में संस्था से मिला और आज मैं बिल्कुल ठीक हूं। आज मैं १८ साल का हूं। और मैं सब से यही कहना चाहता हूं। कि कभी हिम्मत नहीं हारनी चाहिए और ईश्वर पर भरोसा रखना चाहिए। मैं एक ही बात कहना चाहता हूं। बाल कैंसर का इलाज संभव है।

मेरा बेटा २००१ में पैदा हुआ था। उस समय हमको कुछ पता नहीं चला। जब बच्चा ८.६ महीने का हो गया तब उसकी आंख में शीशा जैसा चमकता दिखाई दिया। तब हमने इधर–उधर लोगों से बात किया। कुछ लोग बोले डॉक्टर को दिखाओ। कुछ लोग बोले ऊपरी चक्कर है। मेरा तो दिमाग काम ही नहीं कर रहा था कि क्या करें क्या न करें। धीरे–धीरे ६ महीने और बीत गया फिर हमने कई आंख के बड़े डॉक्टरों को दिखाया सभी डॉक्टरों ने एम्स (RPC) में दिखाने की सलाह दी। फिर मैंने एम्स ल्ब में दिखाया तो जांच के बाद पता चला कि बच्चे की आंख मैं कैंसर है और उस आंख को निकालनी पड़ेगी। फिर डॉक्टरों ने जो जो बताया मैं सब करता रहा। बच्चे की आंख निकालनी पड़ी। उस समय मुझे बहुत दुःख हुआ था। लेकिन खुशी इस बात की थी कि बच्चे की जान और उसके एक आंख तो बच जायेगी। इसीलिए अभी भी ६ महीने में चेक अप के लिए आना पड़ता है।

इलाज करवाने में परेशानी तो होती है लेकिन सबसे बड़ी परेशानी तो बिमारी है जिसका इलाज करवाना बहुत जरूरी है। – देव प्रसाद

– मेरा नाम नीरज है। मैं बारह साल का हूं। जब मैं ६ साल का था तब मेरी तबीयत खराब होने के बाद अस्पताल में भर्ती करवाने के बाद हमें यह पता चला कि मुझे कैंसर है। इस बिमारी के बारे में पता चलते ही मुझे बहुत डर लगा कि मैं अब नहीं बच पाऊंगा। मैंने अपने बचने की उम्मीद ही छोड़ दी थी। लेकिन मेरे मम्मी–पापा, मेरे परिवार और डॉक्टरों ने मुझे हौसला दिया और इस बीमारी से लड़ने की ताकत दी। सही समय पर इस बात का पता चलते ही मेरा इलाज शुरू हुआ। मैंने सभी दवाईयां ठीक समय से लीं और डॉक्टर द्वारा बताए गए सुझाव को माना।अंत में मुझे इस बिमारी से मुक्ति मिली और अब मैं बिल्कुल स्वस्थ हूं। भाइयों और बहनों हमें कैंसर से घबराना नहीं चाहिए। आवश्यकता है केवल हिम्मत व साहस की। हमें अपने ऊपर और भगवान पर पूरा भरोसा करना चाहिए।

मेरा नाम इन्द्र राज है मैं १२ साल का हूं। और नौवीं क्लास में पढ़ता हूं। मैं मार्च २०११ में रेवाड़ी हरियाणा में से दिल्ली अखिल भारतीय आयुविज्ञान संस्थान में दवाई के लिए आया था। जब मुझे दवाईयां लगती थी तब मुझे दर्द होता और रोता था। डॉक्टर मुझे सुई लगाते तो मुझे डर लगता था। जब मैं घर से आता था तो मेरा आने को मन नहीं करता था, और मेरा पढ़ाई में भी मन नहीं लगता था। जैसे जैसे मेरी दवाई चलती गई मैं ठीक होता गया। अब मेरा स्कूल जाने में भी मन लगता है। और मैं डॉक्टर से दिखाने के लिए आता हूं तो मुझे और बच्चों से मिलने के लिए मौका मिलता है, और मेराअब आने को भी मन करता है।

मैं इन्द्रराज का पिताजी, मैं पहली बार मार्च २०११ में इन्द्रराज को इलाज के लिये रेवाड़ी से दिल्ली अखिल भारतीय आयुविज्ञान संस्थान में लाया था, तो मैं बहुत दुखीः था। और मुझे लगता था कि ये इन्द्रराज ठीक होगा या नहीं, जैसे ही डॉक्टरो ने इलाज शुरू किया तो मुझे थोड़ा विश्वास बंधा कि अब ये ठीक हो जाएगा। और इन्द्रराज ठीक होता गया। फिर आज ये पूरी तरह से ठीक हैं तो मैं इन्द्रराज का पापा बहुत खुश हूं।

Cancer is a journey, but you walk the road alone. There are many places to stop along the way and get nourishment - you just have to be willing to take it Courage, Strength, Determination is what you are all made of as cancer warriors, fighters, survivors and caregivers. Sometimes the fight gets a little tough, but look out for the light at the end of the tunnel. It's full of hope

Saransh

When we came here, we knew that our Saransh has a problem of ALL. We were very depressed but doctor's advised us that this problem may be curable and right now we are giving him treatment from here. We are satisfied with the doctors.

I am Anuj Sharma. I had Hodgkins Lymphoma at the age of 5 years.

I finished treatment in 1996.

I was treated by Dr. Vasantha and Dr. Rachna.

Now, 16 years after my treatment, I have done my B.C.A and am working with the Indian Cancer Society. I believe that even after cancer there is a beautiful life and I must live my life my own way.

I am passionate about workouts and train in the Gym to have a strong Physique. No one imagine that a cancer survivor can have a great Physique.

Shreya's sister ....as she recalls the days when Shreya , an ALL survivor was undergoing treatment

There are four members in our family, Mom, Dad, Me and my Sister shreya. We were like a world's happiest family.

When I was in 5th std, I came to known about my sister's disease. I did not have much knowledge about "cancer". My family sank into sadness

As we all came to know that she was suffering fro Blood Cancer. My Mom and Dad started searching for the best hospital where she can be treated. They took her to the AIIMS hospital where she can be treated perfectly. We all were

scared with this disease but in our hearts we had a hope that surely she is going to fight back with the disease. The treatment was going smoothly but suddenly one day is some mistake she lost her vision. Doctors said that even if she gets will still she will not get her vision back. She will be blind for the rest of her life. Our family was again sad. Even I was feeling bad because I used to play with my sister but now I don't have any others option. My mother fathers and my sister used to go to the hospital regularly that's why I have to be alone at home I used to get bored. Sometimes I used to pray to god to make her well so that we may play together. After she lost her vision every one was praying for her and she got her vision after 3 days. We all were very happy for her.

Her treatment completed in 2008. She won over cancer. She fought back with cancer and got well.

I was happy because I don't have to stay alone at home. I can play with. They don't have to visit the hospital again and again. She started going to the school with me.

मेरा नाम वालेश देवी है। मैं लक्ष्य की मां हूं। मेरे बच्चे की बीमारी की शुरूआत में तेज बुखार और दाहिने हाथ में दर्द होता था। और कभी–कभी उलटी दस्त भी होते थे। मैंने इसका उपचार देहरादून, रुड़की, सहारनपुर सभी जगह कराया लेकिन उसकी बीमारी का पता नहीं चल पाया। फिर हम इसको एम्स लेकर आये। जब इसका उपचार हुआ तो काफी दिक्कते आयीं लेकिन मैंने हिम्मत नहीं हारी और अब मेरा बच्चा बिल्कुल ठीक है स्कूल जाता है और अब अच्छे से है। जब मेरे बच्चे को इंजेक्शन लगते थे तो हम काफी रोते थे और बच्चा भी बोलता था कि मुझे घर जाना है बच्चे को ऐसे बोलते देख हम बहुत दुखी होते थे। मेरी दो बेटियां अकेली घर में रहती थी। जब हम उनको फोन करते तो हमारी बेटियां कहती मां आप और भैया कब आ रही हैं। मुझे अपनी दोनों बेटियों की बहुत याद आती थी और उनकी भी चिंता लगी रहती, वे अकेली रहती थी।

मैं प्रियांशु की बुआ हूं। मेरा नाम सुभद्रा है। जब ये १० महीने का था तब इसका पिता गुजर गये थे। गुजर जाने के बाद ही इसके बीमारी का पता चला। तो मैं इसको दो साल पटना में इलाज कराया लेकिन आराम नहीं हुआ तो मैं इसको दिल्ली लेकर आई तब यहां से इलाज शुरू हुआ। तब मुझे बहुत दुःख होता था जब इसको इंजेक्शन और टेस्ट होता था। बच्चे को भी दर्द होता था। चौबीस घंटे तक दवाई चढ़ता था। मैं इसके लिए बहुत दुःख उठाया। अपने बच्चे को छोड़कर तीन महीने तक बहुत परेशान हुई हूं। तब इसका इलाज शुरू हुआ। अब इसका इलाज पूरा हो गया तो अब यह स्कूल जाता है और अब ठीक है।

मेरा नाम गोविन्द शर्मा है। मेरे को सन् २००३ में बीमारी हुई थी मैंने सबसे पहले जयपुर दिखाया। मुझे बुखार बार–बार आता था। तब जयपुर के डॉक्टर ने मुझे एम्स में दिखाने की सलाह दी। मैंने तुरंत दिल्ली आकर एम्स में इलाज चालू कर दिया तथा सन् २००३ में मैंने डॉक्टर ने मुझे एम्स में दिखाने की सलाह दी। मैंने तुरंत दिल्ली आकर एम्स में इलाज चालू कर दिया तथा सन् २००३ में मैंने कीमोथैरेपी नियमत रूप से करवाई और पूरा कोर्स सन् २००४ तक चला उसके बाद मैं नियमत समय से डॉक्टर के कहे अनुसार चेकअप करवाता हूं। अब मैंबिल्कुल स्वस्थ हूं। अब मुझको कोई बीमारी नहीं है।

मेरा नाम ममता राठोर है। मैं अतुल की मां हूं। मेरे बच्चे को जब यह बीमारी हुई तब मेरा बच्चा छोटा था बोल नहीं सकता था पर मुझे इस बीमारी का पता जब चला व मेरे को डायरिया और निमोनिया हुआ था तो मैंने इसे हॉस्पिटल में दिखाया तो डॉक्टर ने बताया कि इसका चश्मा बनेगा इसकी नजर तिरछी है। इसकी बीमारी को इलाज पहले करा लो बाद में चश्मा बनवायेंगे। फिर जब इसकी तबियत और खराब हो गयी बुखार आने लगा। खाना–पीना सब छोड़ दिया तब इस को लेकर मैं दिल्ली आई तब कई जगह दिखाया। सब जगह एक ही जवाब था बचाना चाहते हो तो ऑपरेशन करा लो। दो लाख से २.५ लाख रुपया लगेगा। शुरू में भी खर्च बताया जो हमारे बस में नहीं था। फिर कई लोगों ने बताया कि एम्स में इसका इलाज क्यों नहीं कराते। तब हम अपने बच्चे को लेकर एम्स में आये। यहां इसका इलाज चालू कराया। डॉक्टर ने सारी टेस्ट लिखी। तब हमने बड़ी मुश्किल से अपने बच्चे की टेस्ट कराई। टेस्ट में बड़ी मुसीबत, बच्चे को रोना चिल्लाना, पल–पल में इंजेक्शन लगाना। इसकी नस मिलने में बड़ी परेशानी होती थी। मेरे से देखा नहीं जाता था। पर उसके बाद कीमोथैरेपी जब–जब होती थी तब इसके शरीर में काले नीले से चित्ते पड़ जाते। बुखार, उल्टी–दस्त लग जाती। जिस कारण मेरे बच्चे को बड़ी पेरशानी होती थी। जो मुझसे देखी नहीं जाती थी। पर बच्चे का इलाज नहीं बंद कराया। जिसके कारण आज मेरा बच्चा ठीक है। और स्कूल में पढ़ता भी है। ग्वालियर में महाराणा प्रताप स्कूल में और अब हम उसकी कोई भी टेस्ट करते हैं तो ठीक आती है।

Every tomorrow has two handles. We can take hold of it by the handle of anxiety, or by the handle of faith.

Enjoy the little things, for one day you may look back and realize they were the big things.

Cancer is a journey, but you walk the road alone. There are many places to stop along the way and get nourishment - you just have to be willing to take it.

Essentials in treatment..

"Throughout my journey with cancer, hope was my constant companion to take me to the next day. Faith was at my side and in my heart to provide me with energy. Determination was in my soul to provide me with indelible strength. Love and support surrounded me through my journey and held my hand during the darkest moments of my life. Hope, Faith, Determination, Love and Support are essential ingredients for every cancer warrior.

"Each Day

"Each day, we fight and overcome our battles makes us one day stronger from the last. It's not easy fighting cancer and dealing with side effects , but we gotta do what we must do to win our fight against cancer. Take each day you overcome these challenges as a triumph."

Goals

"Use that inner strength you have within you to make it to the next goal. Think of positive things that keep you going like family, friends and happy memories. Hold on to those happy moments in your life to give you strength. There will be some tough days and there will be good days. Don't give up on the tough days. That's when we need to lift ourselves up and use those tough days to make us stronger for the next day. You will have good days....embrace those good days.

.What Cancer Can not Do

Cancer is so limited...

It cannot cripple love.

It cannot shatter hope.

It cannot corrode faith.

It cannot eat away peace.

It cannot destroy confidence.

It cannot kill friendship.

It cannot shut out memories.

It cannot silence courage.

It cannot reduce eternal life.

It cannot quench the Spirit

It cannot curb your motivation to fight cancer

Contact us:
Department of Pediatrics
All India Institute of Medical Sciences,
New Delhi-110029 Ph. :26594345, 38593209,
Email : c3sambhav@gmail.com

**Never give up Life,
IS worth living,
There is life after cancer**

SAP Entp. # 9868522064, 9953210605